आचार्य द्विवेदी के युगीन साहित्य की दृष्टि - एक विश्लेषण

Acharya Dwivedi Ke Yugin Sahitya Ki Drushti – Ek Vishleshan

***Dr.Manjushree Menon, Associate Professor of Hindi, M.E.S.College of Arts, Commerce and Science, Bangalore.**

भूमिका:-

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी आलोचना के प्रथम आधार स्तम्भ है। उन्होंने हिन्दी आलोचना को परम्परा से हटकर एक नवीन सांस्कृतिक भूमि पर प्रतिष्ठित किया। जिसका सूत्रपात भारतेन्दु-युग में श्री बालकृष्ण भट्ट ने किया था। उनका एक महत्त्वपूर्ण निबन्ध सन् १९२० में 'कविता और भविष्य' निकला। जिसमें धूल भरे किसान और मैल मजदूर की हिमायत करते हैं। तथा असाधारण के स्थान पर साधारण को प्रतिष्ठित करने की बात करते हैं। उन्होंने कहा था- भविष्य कवि का लक्षण इधर ही होगा। अभी तक वह मिट्टी में सने हुए किसानों और कारखानों से निकले हुए मैल मजदूर को अपने कार्यों का नायक बनाना नहीं चाहता था वह राज-स्तुति, वीर-गाथा अथवा प्रकृति वर्णन में ही लीन रहता था, परन्तु अब वह क्षुद्रो की भी महत्ता देखेगा और तभी जगत् का स्वरूप सबको विदित होगा।

द्विवेदीजी साहित्य को उपयोगिता की कसौटी पर आंकते और उसे 'ज्ञानराशी का संचित कोष' मानते थे। द्विवेदी युग ने ज्ञान की साधना पर विशेष बल दिया। इस युग के लेखक प्राचीन भारत के ज्ञान-विज्ञान की खोज और पश्चिम के नये आलोक से अपने देशवासियों को परिचित कराना चाहते थे। द्विवेदी युग ने हिंदी को जितने विद्वान दिए, आधुनिक भारत के अन्य किसी युग ने नहीं।

हिंदी भाषा के प्रसार, पाठकों के रुचि परिष्कार और ज्ञानवर्धन के लिए द्विवेदी जी ने विविध विषयों पर अनेक निबंध लिखे। विषय की दृष्टि से द्विवेदी जी निबंध आठ भागों में विभाजित किए जा सकते हैं - साहित्य, जीवन चरित्र, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, उद्योग, शिल्प भाषा, अध्यात्म। द्विवेदी जी ने आलोचनात्मक निबंधों की भी रचना की। उन्होंने आलोचना के क्षेत्र में संस्कृत टीकाकारों की भांति कृतियों का गुण-दोष विवेचन किया और खंडन-मंडन की शास्त्रार्थ पद्धति को अपनाया है।

द्विवेदी जी सरल और सुबोध भाषा लिखने के पक्षपाती थे। उन्होंने स्वयं सरल और प्रचलित भाषा को अपनाया। उनकी भाषा में न तो संस्कृत के तत्सम शब्दों की अधिकता है और न उर्दू-फारसी के अप्रचलित शब्दों की भरमार है। वे गृह के स्थान पर घर और उच्च के स्थान पर ऊँचा लिखना अधिक पसंद करते थे। द्विवेदी जी ने अपनी भाषा में उर्दू और फारसी के शब्दों का निस्संकोच प्रयोग किया, किंतु इस प्रयोग में उन्होंने केवल प्रचलित शब्दों को ही अपनाया। द्विवेदी जी की भाषा का रूप पूर्णतः स्थित है। वह शुद्ध परिष्कृत और व्याकरण के नियमों से बंधी हुई है। उनका वाक्य-विन्यास हिंदी को प्रकृति के अनुरूप है कहीं भी वह अंग्रेज़ी या उर्दू के ढंग का नहीं।

भाषागत विशेषताएं

द्विवेदी जी के निबन्धों की भाषा विषयानुकूल है। आलोचनात्मक निबन्धों में शुद्ध परिनिष्ठित संस्कृत तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा का प्रयोग है तो भावात्मक निबन्धों में काव्यात्मक भाषा दिखाई पड़ती है। द्विवेदी जी ने स्थान-स्थान पर संस्कृत की सूक्तियों के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली बनाने में सफलता प्राप्त की है।

द्विवेदी जी मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त थे। द्विवेदी जी की भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता है तथापि उर्दू एवं अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी उनकी भाषा में प्रयुक्त हुए हैं। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्दों का भी प्रचुर प्रयोग हुआ है। वास्तव में वे व्यावहारिक भाषा के पक्षधर थे और ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे जो नित्यप्रति के व्यवहार में आती हो तथा जिसे समझने में किसी को भी कठिनाई न हो।

शैलीगत विशेषताएं

भावात्मक शैली

भावात्मक शैली का प्रयोग उनके प्रति सम्बन्धी निबन्धों में प्रचुरता से हुआ है। इसमें कोमलकान्त मधुर पदावली के साथ-साथ अनुप्रास की छटा सर्वत्र विद्यमान है। ऐसे स्थलों पर भाषा में आलंकारिकता का भी समावेश हुआ है। यथा : "कुंकुम मिश्रित सफेद चन्दन के सदृश उन्हीं लालिमा मिली हुई सफेद किरणों से चन्द्रमा पश्चिम दिग्वधू का श्रृंगार सा कर रहा है।"

गवेषणात्मक शैली

इस शैली का प्रयोग द्विवेदी जी ने अपने साहित्यिक निबन्धों यथा- "कवि कर्तव्य, कालिदास की निरंकुशता" आदि में किया है। इसमें वाक्य कसे हुए हैं तथा संस्कृत बहुल पदावली का प्रयोग है। इन निबन्धों में गम्भीरता का पुट है तथा विषय प्रतिपादन में विश्लेषण एवं तर्क की प्रधानता है। गंभीर साहित्यिक विषयों के विवेचन में द्विवेदी जी ने इस शैली को अपनाया है। इस शैली के भी दो रूप मिलते हैं। पहला रूप उन लेखों में मिलता है जो किसी विवादग्रस्त विषय को लेकर जनसाधारण को समझाने के लिए लिखे गए हैं। इसमें वाक्य छोटे-छोटे हैं। भाषा सरल है। दूसरा रूप उन लेखों में पाया जाता है जो विद्वानों को संबोधित कर लिखे गए हैं। इसमें वाक्य अपेक्षाकृत लंबे हैं। भाषा कुछ क्लिष्ट है। उदाहरण के लिए -

अप्समार और विक्षिप्तता मानसिक विकार या रोग है। उसका संबंध केवल मन और मस्तिष्क से है। प्रतिभा भी एक प्रकार का मनोविकार ही है। इन विकारों की परस्पर इतनी संलग्नता है कि प्रतिभा को अप्समार और विक्षिप्तता से अलग करना और प्रत्येक परिणाम समझ लेना बहुत ही कठिन है।

विचारात्मक शैली

विचारात्मक शैली में लिखे गए निबन्ध विचार प्रधान हैं जिनमें शुद्ध परिनिष्ठित तत्सम शब्दों वाली हिन्दी का प्रयोग हुआ है। वाक्य लम्बे-लम्बे किन्तु विचार सूत्रों से युक्त हैं, यथा : "जो प्रतापी पुरुष अपने तेज से अपने शत्रुओं को पराभव करने की शक्ति रखते हैं, उनके अग्रगामी सेवळ भी कम पराक्रमी नहीं होते। द्विवेदी जी ने

नये-नये विषयों पर लेखनी चलाई। विषय नये और प्रारंभिक होने के कारण द्विवेदी जी ने उनका परिचय सरल और सुबोध शैली में कराया। ऐसे विषयों पर लेख लिखते समय द्विवेदी जी ने एक शिक्षक की भांति एक बात को कई बार दुहराया है ताकि पाठकों की समझ में वह भली प्रकार आ जाए। इस प्रकार लेखों की शैली परिचयात्मक शैली है।

वर्णनात्मक शैली

द्ववेदी जी के वर्णनात्मक निबन्धों में इस शैली का प्रयोग किया गया है। किसी स्थान, घटना या तथ्य का वर्णन करना उनका उद्देश्य है, वहां वर्णनात्मकता की प्रमुखता है। आत्म-कथाम निबन्धों में भी यही शैली दिखाई पड़ती है। 'दण्डदेव का आत्म निवेदन, हंस सन्देश' नामक निवन्धों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।

हास्य-व्यंग्य शैली

द्विवेदी जी के निबन्धों में स्थान-स्थान पर हास्य व्यंग्य का समावेश भी किया गया है। विशेष रूप से सामाजिक कुरीतियों एवं अन्धविश्वासों पर वे हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में प्रहार करते हैं। ऐसे स्थलों पर शब्द विधान सरल तथा वाक्य छोटे-छोटे किन्तु कसे हुए होते हैं। इस शैली का एक उदाहरण द्रष्टव्य है- "इस म्यूनिसपेलिटी के चेयरमेन श्रीमान बूचाशाह हैं। बाप-दादों की कमाई का लाखों रुपया आपके घर में भरा है। पढ़े-लिखे आप राम का नाम हैं।"

आलोचनात्मक शैली

हिंदी भाषा के प्रचलित दोषों को दूर करने के लिए द्विवेदी जी इस शैली में लिखते थे। इस शैली में लिखकर उन्होंने विरोधियों को मुंह-तोड़ उत्तर दिया। यह शैली ओजपूर्ण है। इसमें प्रवाह है और इसकी भाषा गंभीर है। कहीं-कहीं यह शैली ओजपूर्ण न होकर व्यंग्यात्मक हो जाती है। ऐसे स्थलों पर शब्दों में चुलबुलाहट और वाक्यों में सरलता रहती है। 'इस म्यूनिसिपाल्टी के चेयरमैन (जिसे अब कुछ लोग कुर्सी मैन भी कहने लगे हैं) श्रीमान बूचा शाह हैं। बाप दादे की कमाई का लाखों रुपया आपके घर भरा हैं। पढ़े-लिखे आप राम का नाम हैं। चेयरमैन आप सिर्फ़ इसलिए हुए हैं कि अपनी कार गुज़ारी गवर्नमेंट को दिखाकर आप राय बहादुर बन जाएं और खुशामदियों से आठ पहर चौंसठ घर-घिरे रहें।' **हिन्दी भाषा का संस्कार एवं परिष्कार करने वाले द्विवेदी जी निश्चय ही हिन्दी के महान साधक थे।**

निष्कर्ष :

आचार्य द्विवेदी अपने समझ को एक व्यापक जमीन पर विकसित करते हैं ।संस्कृत के कई प्रतिष्ठित लेखकों पर उन्होंने गंभीरतापूर्वक लिखा तथा उनकी कमियों को साहसपूर्वक दिखाया ।संस्कृत ही नहीं बांग्ला ,अंग्रेजी ,मराठी और उर्दू साहित्य को मनन करते हुए उन्होंने हिंदी में गंभीर पाठक वर्ग को पैदा किया ।उर्दू साहित्य की प्रशंसा उन्होंने जिस मनोयोग से किया ,वह उनकी निष्पक्ष दृष्टि और हिंदी के सेकुलर भविष्य की ओर संकेत करती है " उर्दू का साहित्य समूह हिन्दी से बढ़ा चढ़ा है ।इस बात को कबूल करना चाहिए । उर्दू लेखकों में शम्स उलमा हाली ,आजाद जकाउल्ला ,नजीर अहमाद आदि की बराबरी करने वाला हिन्दी में शायद ही कोई हो "

उन्होंने प्राचीन साहित्यिक परंपरा के क्षयमान तत्वों का खुलकर विरोध किया ।उन्होंने स्पष्ट कहा कि नायिका भेद जैसे ग्रन्थों के न होने से न केवल युवा वर्ग बल्कि सबका कल्याण है ।उन्होने कविता मे सरल और जनसाधारण की भाषा को ही उपयुक्त माना ।आलंकारिकता के विरूद्ध सहजता का उन्होंने खुलकर समर्थन किया । राष्ट्रप्रेमी द्विवेदी जी हर तरह से सामंतवाद और रीतिवाद को पराजित करना चाहते थे ,इसीलिए उन्होंने अपने लिए एक कठोर नीरस और रूक्ष विद्वान की भूमिका का वरण किया ।कूड़ा करकट हटा के ही उन्होंने वह जमीन बनायी ,जिस पर आचार्य राम चन्द्र शुक्ल खड़े हुए ।

संदर्भ ग्रंथ:-

- हिंदी भाषा और महावीर प्रसाद द्विवेदी , मधु गौतम, लोकभारती प्रकाशन, नयी दिल्ली, २०२०
- हिंदी नवजागरण के अग्रदूत, महावीर प्रसाद द्विवेदी (प्रतिनिधि संकलन), डॉ. रामबक्ष ,नेशनल बुक ट्रस्ट, नयी दिल्ली, २०१२
- हिन्दी आलोचना शिखरों का साक्षात्कार- रामचन्द्र तिवारी, लोकभारती प्रकाशन,पृष्ठ-३५
- हिन्दी आलोचना- विश्वनाथ त्रिपाठी, राजकमल प्रकाशन, पृष्ठ- २५